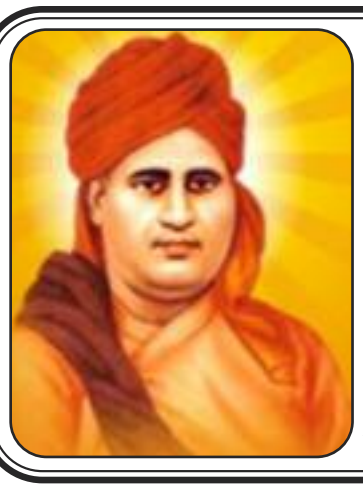

आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 300 ARYA SABHA MAURITIUS 21st Dec. *to 31st Dec. 2014*

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ।।५।।

ऋग् वेद ७/४१/५

Om bhaga éva bhagavām astu devāsténa vayam bhagavantah syāma.
Tan twā bhaga sarva ijjohaviti sano bhaga pur étā bhavéha.

Rig Véda 7/41/5

O les hommes sages et éclairés!

Notre Dieu, unique et digne d'adoration, ne peut être nul autre que le Dieu tout puissant, éternel, incorporel, resplendissant et le maître suprême de l'univers. Il ne peut nullement être des choses inanimées de la nature telles que des idoles, des rochers, des montagnes, des étendus d'eau, des rivières, des régions de la terre des plantes et ni des êtres humains, des animaux ou des oiseaux liés par le cycle éternel de la naissance et de la mort.

Grâce à l'aide des sages, même les hommes ignorants deviennent des élites et des dévots de Dieu, trouvent le bonheur dans la vie et apportent leur soutien à d'autres gens démunis.

O Seigneur! Par ta grâce, que les hommes soient dotés de capacité physique, intellectuelle et morale et qu'ils aient une foi inébranlable en toi pour qu'ils puissent transmettre ta foi dans le cœur des hommes, les transformer en tes dévots et les délivrer des ténèbres de l'ignorance et du péché.

O Dieu! Tout ceci nous démontre la puissance de ta grâce et ta bénédiction.

N. Ghoorah

काल का अभिनन्दन

डा० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न

'काल' के लिए दूसरे शब्द हैं – समय, वक्त, टाइम आदि। अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड के तिरपनवें सूक्त में अनेक ऐसे मन्त्र आये हैं, जो काल के महत्व को दर्शाते हैं। इस सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकार है –

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्यतस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ।।

शब्दार्थ – **कालः** - समय; **अश्वः** - घोड़ा; **वहति** - चलता रहता है; **सप्तरश्मिः** - सात प्रकार की किरणों वाले सूर्य; **सहस्राक्षः** - सहस्रों नेत्रों वाला; **अजरः** - बूढ़ा न होने वाला; **भूरिरेताः** - रहता है; **तम्** - उसपर; **रोहन्ति** - चढ़ते हैं; **कवयः** - ज्ञानवान्; **विपश्चितः** - बुद्धिमान् लोग; **तस्य चक्रा** - उस काल रूपी चक्र; **भुवनानि** - सत्ता वाले; **विश्वा** - सब ।

उपर्युक्त मन्त्र का भाव यह है कि समय बड़ा बलवान् है। वह सर्वत्रव्यापी और अति शीघ्रगामी है। सूर्य अपनी किरणों से प्रकाश फैलाता है। उसकी किरणें सात रंगों की हैं – सफ़ेद, नीली, पीली, लाल, हरी, भूरे रंग की और धारीदार रंग की। उस काल को बुद्धिमान् लोग सब अवस्थाओं में घोड़े के समान सहायक जानकर अपना कर्तव्य सिद्ध करते हैं।

समय रूपी घोड़ा आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है। जो उस घोड़े पर सवार हो जाता है, वही जीवन में उन्नत होता है। जो समय से खिलवाड़ करता है, समय उसको अवनति के गड्ढे में धकेल देता है।

समय का पालन करने से हमारी उन्नति कैसे होती है? इस उत्तर को पाने के लिए हमें यह ज्ञान होना है कि हमारे जीवन के चार पड़ाव हैं। पहला पड़ाव विद्यार्थी जीवन का है, दूसरा पारिवारिक जीवन का, तीसरा सामाजिक जीवन का और चौथा राष्ट्रीय जीवन का। हमारे ऋषियों ने इन चार पड़ावों को आश्रम-व्यवस्था में परिणत किया है और इन चार आश्रमियों को ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी तथा संन्यासी शब्द से सम्बोधित किया है।

ब्रह्मचर्य-काल में जो अपने समय को विद्यार्जन एवं वैयक्तिक विकास में व्यतीत करता है, वही उन्नति के शिखर पर पहुँच पाता है। जो समय को नष्ट कर देता है, उसका जीवन अविद्या के अन्धकार में विलीन हो जाता है, उसका भावी जीवन दुखमय हो जाता है।

जो गृहस्थ समय का सदुपयोग करके परिश्रमपूर्वक धनार्जन करता है, वह अपने पारिवारिक जीवन को समुन्नत कर लेता है। वह परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होता है।

गृहस्थाश्रम के कर्तव्यों को पूरा करने के बाद जीवन के तीसरे पड़ाव में हम अपने समय को समाज की सेवा में व्यतीत करते हैं और यदि पचहत्तर वर्ष पार कर लेते हैं, तब सभी मोह-माया से मुक्त होकर जन-जन की सेवा में लगकर राष्ट्र और विश्व का निर्माण करते हैं। विश्व हमारा कुटुम्ब बन जाता है।

समय का परिपालन करने से ही हम चारों आश्रमों के कर्तव्यों को पूर्ण करने में समर्थ होते हैं। इसलिए समय के महत्व को समझना आवश्यक है। जो क्षण-क्षण का सदुपयोग करता है, वही सुखी एवं यशस्वी बनता है।

समय की सूचना देने के लिए घड़ी का आविष्कार किया गया। घड़ी को अंग्रेज़ी में 'ध्ह्रुद्यड़ण' कहते हैं। इस सब्द में पाँच वर्ण हैं – 'w', 'a', 't', 'c', और 'h' । ये पाँचों वर्ण हमें शिक्षाप्रद सन्देश देते हैं, यथा – 'w' का सन्देश है - watch अर्थात् चौकसी करो; 'A' का माने है - Action; अर्थात् watch your action, अपने कर्मों का अवलोकन करो;

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

महा बलिदानी श्रद्धानन्द

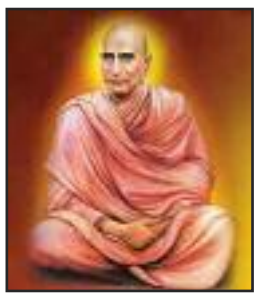

महर्षि दयानन्द जी के बाद आर्य समाज को संगठित करके प्रबल बनाने में स्वामी श्रद्धानन्द जी का भारी योगदान है। हिन्दू समाज की सारी कुरीतियाँ, कुप्रथाएँ तथा उच्च-नीच का भेदभाव दूर हटाने में उन्होंने सराहनीय कार्य किया है। कुपंथियों को सुपथ पर लाने में अद्वितीय कर्म निबाना है। भारतीयों के दुर्गुणों और सारे अभद्र आचरणों को सुधारने में अपना जीवन समर्पित किया है।

स्त्री शिक्षा एवं महिलाओं की सुरक्षा निमित स्वामी श्रद्धानन्द ने पूरा योगदान दिया है। उन्होंने समाज से तिरस्कृत अबला जनों, विधवाओं, दासियों और असहाय नारियों को सम्मानित करके सबके साथ मिलकर जीने का भाग्य दिया है। उन्हीं के चलाये अभियान से भारतीय नारियों का कल्याण-मार्ग प्रशस्त हो गया, इतना ही नहीं, उन्होंने अछूतों के उद्धार में तथा उनके अधिकार में महा संघर्ष किया है।

शुद्धि-आंदोलन कार्यों में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तो अपने जीवन का बलिदान दे दिया। स्वधर्म का त्याग करने वाले असंख्य नादान हिन्दुओं को शुद्धि-संस्कार द्वारा पुनः हिन्दू समाज में प्रवृष्ट कराने में उन्होंने एक अद्भुत आंदोलन चलाकर हिन्दू जाति की रक्षा की। हिन्दू समुदाय सदा उनके महात्याग और तपोबल से असंख्या हिन्दू भाई-बहन, इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म को त्याग कर पुनः वैदिक धर्मावलंबी बन गए। हम उनके परोपकार के प्रति आभारी हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को जीवित रखने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्थापित करके भारतीय छात्र-छात्राओं को वैदिक-धर्म एवं भारतीय संस्कृति, सामाजिक सेवा तथा राष्ट्र रक्षा की भावनाएँ उत्पन्न की। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी महाबली श्रद्धानन्द ने अपने जीवन का महात्याग किया। इससे यह प्रमाणित होता है कि वे मानवीय सेवाओं के साथ ही सामाजिक उद्धार तथा राष्ट्रीय कल्याण हेतु अपने जीवन को निछावर करते रहे। ऐसे महा बलिदानी के हम पूजनीय हैं।

महावीर श्रद्धानन्द जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व साहस, धैर्य, महात्याग और कर्मनिष्ट भावों से प्रभावित होकर अनेक भारतीय महापुरुषों, नेताओं, विद्वानों, धनवानों और राजनेताओं ने आर्य समाज के आंदोलन कार्यों में पूरा सहयोग देना स्वीकार किया। स्वामी जी की प्रेरणा से भारत में नवीन जागृति उत्पन्न हुई। भारतीयों में एकताबल प्रदान करने में हुतात्मा श्रद्धानन्द ने बड़ा ही साहस पूर्ण अभियान चलाया था।

कर्म-योगी श्रद्धानन्द के आदर्श गुणों, सेवा-भावों, पवित्र भावनाओं तथा उनके संघर्षमय जीवन से भारतीय जनता की आत्माएँ जाग उठी थी, उनमें वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं समाजिक सुधार तथा राष्ट्रीय उद्धार करने की चेतनाएँ पैदा हो गईं। परोपकारी भावनाओं के साथ अपने जीवन का महात्याग करते हुए श्रद्धानन्द ने २३ दिसम्बर १९२६ ई० को अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस हम समस्त हिन्दूओं के लिए एक प्रेरणा दायक महोत्सव है। इस महान उत्सव से प्रेरित होकर हमें पर-सेवा और परोपकार निमित अपने जीवन को निछावर कर देना चाहिए। सामाजिक सेवा कार्यों में अपने जीवन को समर्पित कर देना चाहिए, ताकि मॉरिशस में वैदिक विद्याओं का प्रचार-प्रसार प्रचुर मात्रा में हो सके। हम युवा-युवतियों को सही मार्ग दिशा दिखाने में हम सभी समर्थ हो सके। स्वधर्म का परित्याग करके मिसियों, ज़ेओवा, बहाई, ईसाई आदि भ्रमात्मक जाल में फंसने वाले युवावर्गों को रोकने में सफल हो सके। नादानों की रक्षा कर सके भूले भटके। हमारी सामाजिक एकता को विघटित करने वाले स्वार्थी सदस्यों की योजना को विफल करने में अगर हम संघर्ष करेंगे तभी हम समझेंगे कि महाबली श्रद्धानन्द जी के तपोमय जीवन से हमने कुछ सीखा है और अपने जीवन में उसे निभाया है।

पाठक वृंद ! २०१४ का वर्ष अब समाप्ति पर आ गया और हम नूतन वर्ष का स्वागत करेंगे। हमारी यही मनोकामना है कि २०१५ का वर्ष हम सभी के लिए मंगलमय हो ।

बालचन्द तानाकूर

अमर हुतात्मा -- स्वामी श्रद्धानन्द

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

महात्मा मुंशीराम को, स्वामी दयानन्द ने तब ही प्रभावित कर दिया था जब अपने प्रचार कार्य के दौरान उत्तर भारत का दौरा करते हुए बाँस बरेली नगर पहुँचे थे। सुधार कार्य के अन्तर्गत खण्डन-मण्डन का बहुत तेज प्रचार चला रहे थे। कट्टर सनातन धर्मावलम्बियों को सुधार कार्य भाता नहीं था तो उसे रोकने के लिए हुल्लड़बाज़ी पर उतर आते थे। शासन की ओर से राजभक्त नामकचन्द को शान्ति बनाये रखने के लिए नियुक्त किया गया था।

नामक चन्द मुंशीराम के पिता थे। सनातनी होते हुए भी दयानन्द से बहुत प्रभावित थे। पिता ने पुत्र से एक बार उस लंगोटधारी को सुन लेने की माँग की । शुरू शुरू में तो वृहस्पति (स्वामी श्रद्धानन्द के बचपन का नाम) ने साफ़ इन्कार किया पर पिता के बहुत माँग करने पर स्वामी दयानन्द को सुनने हेतु प्रचार स्थल पर पहुँचे जहाँ स्वामी जी भगवान के निज नाम 'ओ३म्' की व्याख्या कर रहे थे। व्याख्यान सुनकर वृहस्पति इस कदर प्रभावित हुए कि लगातार तब तक भाषण सुनने गए जब तक स्वामी जी वहाँ पर व्याख्यान देते रहे। केवल अन्तिम दिन स्वास्थ्य खराब होने के कारण नहीं जा पाये। उन व्याख्यानों का असर इतना पड़ा कि मुंशीराम जिसका भगवान के अस्तित्व से विश्वास उठ चुका था फिर से ईश्वर विश्वासी हो गये।

मृत्यु शैया पर पड़े हुए स्वामी दयनन्द ने इसी प्रकार गुरुदत्त विद्यार्थी को ईश्वर विश्वासी बना दिया था। महान् वैदिक भजन उपदेशक अमीचंद उनका भी ईश्वर पर से विश्वास उठ गया था। 'अमीचंद, तुम तो मोती हो कीचड़ में कैसे गिर पड़े हो', स्वामी जी के इन शब्दों ने अमीचंद को कीचड़ से निकाल कर कुन्दन बना दिया।

स्वामी दयानन्द कलकत्ता से लौटने के बाद हिन्दी में व्याख्यान देने लगे, हिन्दी में लिखने लगे और हिन्दी में ही शास्त्रार्थ करने लगे थे। यही वजह थी कि हिन्दी भाषा व साहित्य के इतिहास, भारतेन्दु काल में स्वामी जी का नाम श्रद्धा व सम्मान के साथ लिया जाता है। मुंशीराम ने जब वकालत की परीक्षा पास कर अपना दफ्तर खोला तो पंजाब में रहते हुए जहाँ अंग्रेज़ी भाषा का दबदबा था। हिन्दी भाषा में अपना नामपट लिखवाया जिसे देखकर लोगों को बेहद आश्चर्य हुआ। इसपर स्वामी दयानन्द की आर्य भाषा हिन्दी का सरासर प्रभाव था।

१९०२ में जब मुंशीराम ने उत्तर भारत के गंगातटीय स्थल कॉंगड़ी में अपना पहला गुरुकुल खोला जो भारत की प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति के आधार पर था। शिक्षा का माध्यम हिन्दी को ही बनाया था।

जब सन् १९१७ में ६० साल की उम्र में संन्यास लिया तो वे महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए और भारत की राजधानी दिल्ली को ही अपना कार्य क्षेत्र बनाया। वहीं पर रहकर जनता की सामाजिक, राजनीतिक और खासकर नैतिक सेवा की। उस ज़माने में उर्दू का ऊँचा स्थान था। स्वामी जी ने 'तेज़' और 'अर्जुन' नामक पत्र निकाले । पाठक उर्दू पढ़ने वाले थे फिर भी स्वामी जी हिन्दी में लेख लिखते। कुछ दिनों तक 'लिबेरेवर' नामक अंग्रेज़ी सप्ताहिक निकाला था। उनका नाम इतना फैला कि जैसे एक वक्त भारतीय राजनीति में लाल, बाल, पाल प्रसिद्ध थे उसी प्रकार दिल्ली गांधी, डॉक्टर अनसारी, श्रद्धानन्द और हकीम अजमल खाँ के नाम से संबोधित होने लगी थी।

मुंशीराम के संन्यासी होने के दो ही वर्ष पश्चात् अमृत्सर में जलियाँ वाला बाग में हत्या काण्ड हुआ और हज़ारों की संख्या में निहत्थे मासूम लोग गोली के शिकार हुए । पूरे भारत वर्ष में जंगली आग की तरह जनता की नाराज़गी पराकाष्ठा तक पहुँच गयी। अभूतपूर्व घटनाएँ घटीं। भारतीय कॉंग्रस के मूर्धन्य नेताओं ने डटकर ब्रिटिश सरकार की कटू आलोचना की। रवीद्रनाथ ठाकुर नोबल पुरस्कार विजेता ने अपना 'सर' का खिताब ब्रिटिश सरकार को लौटा दिया। भारतीय राष्ट्रीय गान लिखने वाले राज भक्त देश भक्त बन गए ।

आल इन्डियन नास्योनल कॉंग्रेस (All Indian National Congress) का अधिवेशन बुलाया गया। सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक वातावरण बहुत गरम था । बड़े-बड़े पहली पक्ति के नेताओं ने सोचा कि किसको अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया जाए। अन्त में सर्वसम्मति से भगवे लिबास में आवेष्ठित संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द को अध्यक्ष बनाया गया और उन्होंने निडरता और श्रद्धा से उस अहम जिम्मेदारी को निभाकर किसी को भी निराश न किया। ऐतिहासिक बात यह हुई कि राष्ट्रीय कॉंग्रेस के अध्यक्ष पद से पहली बार आर्य भाषा हिन्दी में अध्यक्षीय भाषण दिया। कॉंग्रेस के जन्म काल १८८५ ई० से लेकर १९१९ ई० तक किसी अध्यक्ष ने भी हिन्दी में भाषण नहीं दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दी में भाषण देकर इतिहास रचा और भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी को बनाने का रास्ता खोल दिया और सिद्ध कर दिया कि सच्चे अर्थ में स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी बनने का हक प्राप्त कर लिया। सचमुच स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र भाषा आज हिन्दी है। अब संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने की क्षमता प्राप्त कर रही है। आज भारत चीन के साथ एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रहा। बहुत से देश भारत से व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ने के लिए उत्साह का प्रदर्शन कर रहे हैं। दुनिया के अनेक देशों में हिन्दी भाषा का पठन-पाठन हो रहा है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत ।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी ।
सब हों नीरोग भगवन् धन-धान्य के भण्डारी ।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुःखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ।।

आर्य सभा मोरिशस

के

प्रधान एवं सभी अन्तरंग सदस्य

नूतन वर्ष तथा मंगलमय मकर संक्रान्ति २०१५

के पावन अवसर पर

आपको तथा आपके समाज के सभी सदस्यों एवं परिवारों को शुभ कामनाएँ समर्पित करते हैं ।

१,महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई

काल का अभिनन्दन

डा० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न

पृष्ठ १ का शेष भाग

't' का अर्थ है - thought अर्थात् अपने विचारों की देख-रेख करो; 'c' का अर्थ है- conduct - अर्थात् आचार-व्यवहार; सन्देश है कि watch your conduct, अपने आचार-व्यवहार को देखो और 'h' का अर्थ है - heart; इसका सन्देश है - watch your heart, यानी अपने ह्रदय को देखो। ऐसा नहीं कि कहीं उसमें ईर्ष्या-द्वेष की आंधी उठ रही हो?

यदि हम अपने समय का सदुपयोग करते हुए उसे आत्म-निरीक्षण में लगा दें तो हमारी उन्नति निश्चित है। इसलिए हमें काल का अभिनन्दन करना है, स्वागत करना है।

समय परिवर्तनशील है। क्षण के बाद मिनट, मिनट के अनन्तर घण्टा, घण्टे के पश्चात् दिवस, दिन के उपरान्त सप्ताह, पक्ष, मास, वर्ष, शती, सहस्राब्दि, सत युग, त्रेता, द्वापर आदि बीतते चले गये। काल ने किसी की प्रतीक्षा नहीं की। साल २०१४ भी बूढ़ा होकर हमसे विदा हो गया। जाते-जाते कह गया कि अब सन् दो हज़ार पन्द्रह का जन्म हो गया ।

हमारी शुभ कामना है कि सन् २०१५ का यह नूतन वर्ष सबके लिए मंगलमय हो, हर घर सुख-समृद्धि से भरपूर हो, सभी स्वास्थ्य और सौभाग्य के अधिकारी बनें।

यदि हम सुख-सौभाग्य पाने के अभिलाषी हों तो हमें समय की महिमा का सदा स्मरण करना होगा, समय का पालन करते हुए समय की ही तरह नित आगे बढ़ते रहना होगा। ऐसा करने से हमारी रात्रि शुभ होगी और हमारा दिन सुदिन होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द - एक दिव्य मूर्ति

पण्डित यश्वन्तलाल चूड़ामणि, आर्य भूषण, एम.एस.के.

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के सम्पर्क में आकर मुंशीराम के जीवन में इतना गहरा परिवर्तन आया कि जीवन काल का अंत संन्यास आश्रम में हुआ। दुर्गुण, दुर्व्यसन और नास्तिकता सदा के लिए दूर भाग गये। केवल स्वामी दयानन्द जी के कार्यों से ही वे प्रभावित नहीं हुए बल्कि उन्होंने अपने जीवन में जैसे सत्यवादिता, निर्भिकता, वीरता, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ जैसे गुणों को उतारा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र इन्द्र जी ने 'मेरे पिता' पुस्तक में जाति, धर्म तथा मातृ भूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले अपने श्रद्धेय पिता के जीवन और अनेक कार्यों का सारगर्भित उल्लेख किया है। उन्होंने सिद्ध किया कि उनके पिता जी की कार्य-प्रणाली बहुत विस्तृत थी। उन्होंने जीवन के हर एक पहलू पर गहराई के साथ विचार किया। समाज, परिवार, धर्म, जाति, राष्ट्र, भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए ही तो स्वामी जी ने जीवन का इतना बड़ा बलिदान दिया । सैकड़ों वर्षों तक आने वाली पीढ़ी स्वामी जी के उपकारों के तले दबे रहेंगे।

२३ दिसम्बर १९२६ को, बलिदान के दिन, स्वामी जी काफ़ी बीमार थे। उसी दिन शुद्धि सभा के प्रधान सर राजा रामपाल सिंह ने स्वास्थ्य सम्बन्धी एक तार स्वामी जी को भेजा। उसका उत्तर देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रधान जी को जो तार भेजा। उसमें लिखा था – 'अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर इस जीवन के अधूरे काम के पूरा करूँ'। संयोग वश, स्वामी जी के इस तार के कुछ ही समय बाद उनकी हत्या कर दी गई। उनकी अकस्मात मृत्यु की खबर बिजली की तरह चारों तरफ़ फैल गई । पूरे देश में शोक की लहरें उमड़ पड़ीं। विश्व के कई महान् व्यक्तियों ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके बारे में उत्कृष्ट एवं साधुवाद वचन कहे। महात्मा गांधी जी की दृष्टि में स्वामी श्रद्धानन्द जी एक दृढ़ कर्मवीर थे, धार्मिक विश्वास में अटल थे। श्रद्धा, सत्य और वीरता के वे मूर्तिमान प्रतीक थे। वे उच्च कोटि के संन्यासी ही नहीं बल्कि वीर योद्धा भी थे। स्वामी जी की हत्या की खबर पाते ही महात्मा गांधी जी ने उनके प्रति श्रद्धांजलि हेतु कांग्रेस अधिवेशन में चार प्रस्ताव पारित किये थे।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी स्वामी जी की हत्या पर खेद प्रकट करते हुए कहा था – 'इस दुखद घटना से हिन्दुस्तान में अन्धेरा सा छा गया। सारा हिन्दुस्तान घृणा व रोष से कॉंप उठा। स्वामी श्रद्धानन्द का कत्ल तब हुआ जब से बीमार स्थिति में चारपाई पर पड़े हुए थे। लम्बा कद, भव्य मूर्ति, संन्यास वेश में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी, चमकती हुई आँखें - इस सजीव तस्वीर को मैं कैसे भूल सकता हूँ? अक्सर मेरी आँखों के सामने आ जाती हैं ।'

ब्रिटिश सरकार के एक प्रधान मन्त्री, रामसे माक डोनल्ड, स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों से इतने प्रभावित हुए थे कि एक बार वे स्वामी जी के गुरुकुल देखने आये। लण्डन लौटने पर उन्होंने कहा था– 'वर्त्तमान काल का कोई कलाकार अगर ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल सामने रखना चाहे तो मैं इसी भव्य मूर्ति महात्मा मुंशीराम अर्थात् स्वामी श्रद्धानन्द की तरफ़ इशारा करूँगा'। आज तक किसी भी पाश्चात्य विद्वान् को किसी भी संन्यासी के प्रति ऐसी कीर्तिमान वाणी कहते हुए नहीं सुना गया है। इस प्रकार बहुतों ने साधुवाद के शब्दों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें आर्य जगत की एक दिव्य मूर्ति बना दी।

Nutan Varsha evam Sankranti Abhinandan

Sarve Bhavantu Sukhinah
Sarve Santu Niramaya
Sarve Bhadrani Pashyantu
Ma Kaschit Dukhabhag Bhavet

O Lord! Grant happiness to everyone.
May one and all enjoy a good health.
May all witness auspiciousness and
May none be unhappy.

The President and Members of the Arya Sabha Mauritius have the pleasure to wish you a very happy & prosperous New Year 2015 and a joyful Makar Sankranti.

1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

हिन्दी स्कूल के वार्षिकोत्सव

रविवार दिनांक ७ दिसम्बर २०१४ को प्रातः ८ बजे क्लेरफों, वाक्वा आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में परिवार सहित भाग लेने का मौका मिला। यज्ञ के बाद आदतानुसार जो सत्संग होता है उसमें भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज के दस नियमों का वाचन हुआ। मुझे जल्दी ही समाज के प्रधान की माँग पर एक लघु भाषण देना था जिसके अंतर्गत मैंने पिछले दिनों सिंगापुर, और बेंकोक (थाईलैण्ड) में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की सफलता का ज़िक्र किया।

वहाँ से सीधे मेनिल आर्य समाज गया जहाँ हिन्दी पाठशाला की ८५ वीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी। बच्चों ने यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ के तुरंत बाद बच्चों द्वारा विविध कार्यक्रम पेश किये गये। वहाँ प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् के प्रधान श्री अरविन्द गौड उपस्थित थे। वहाँ से मुझे दक्षिण के दो वार्षिकोत्सवों में भाग लेना था। एक शेमें ग्रेनियें की हिन्दी पाठशाला की ७५ वाँ वार्षिकोत्सव और सुरिनाम पाठसाला की ६१ वीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी।

पहले आर्य सभा के उपप्रधान डा०उदय नारायण गंगू के साथ शेमें ग्रेनिये पहुँचे तो इके-दुके लोग उपस्थित थे। बच्चे उत्साहित थे अपने कार्यक्रम पेश करने के लिए। वहाँ सावान और ब्लाक रिवर परिषदों के प्रधान क्रम से रामजी भाई और बुलाकी पहले ही उपस्थित थे। देखते-देखते जैसे बूँद बूँद से तालाव भरता है वैसे स्कूल के भवन भरने लगा। वहाँ से हम चारों को सुरिनाम पहुँचना था, इस लिए केवल डा०गंगू जी और मुझे लोगों को खासकर बच्चों को सम्बोधन करने का अवसर प्रदान किया गया। हमें खेद था कि बच्चों के शेष कार्यक्रम नहीं देख सके।

वहाँ से २.१५ बजे हम सुरिनाम पहुँचे तो देखकर आश्चर्य हुआ। आर्य मंदिर खचाखच भरा था, चुनाव का माहोल था इस लिए चुनाव क्षेत्र नं०१४ के चार प्रत्यासी उपस्थित थे–आलान गन्नू, एज़रा झब्बू, जो लेजोंगार और श्रीमती बाई माया हनुमानजी। उनको अपने कर-कमलों द्वारा पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान करने को मौका दिया गया। डा० गंगू जी, श्री स.प्रीतम जी एवं श्री राजेंद्र प्रसाद रामजी ने लोगों को सम्बोधित किया।

तीनों वार्षिकोत्सव अति सफल रहे। नवम्बर-दिसम्बर के महीने वार्षिकोत्सव मनाने के मास होते हैं। हम सभा के अधिकारी बँट जाते हैं ताकि हमारे प्रतिनिधि सभी कार्यक्रमों में भाग ले सके।

मार्दे कानी न रहा

गत शनिवार दि० २२ नवम्बर को सुबह तड़के फोन द्वारा राजेंद्र प्रसाद रामजी ने हमें बताया कि श्री मार्दे कानी का केवल एक दिन की बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उस की मृत्यु के बाद सावान प्रांत के एक अच्छे आर्य सेवक की विदाई हो गई। इससे जो खाली जगह छोड़ गया उसको भरना असम्भव तो नहीं है पर समय लगेगा। किसी स्थान को भरने की कठिनाई को देखते हुए किसी दिवंगत आत्मा का महत्व आंका जाता है। सावान प्रान्त के किसी भी आर्य मंदिर में कार्य होता था तो सब से पहले पहुँचने वालों में मार्दे ही होता था। उसकी आयु ७३ वर्ष की थी । उसका जन्म २५ दिसम्बर सन् १९३५ में एक गरीब दम्पती के गृह पर हुआ था। गरीबी के कारण उस ज़माने में भारतीय मूल के बहुत बच्चे प्राथमिक पढ़ाई से वंचित रह जाते थे। ऐसे ही बच्चे हिन्दी की ओर आते थे। आर्य समाज और विष्णुदयाल बन्धुओं की ओर से चलाये जा रहे आन्दोलन से हिन्दी का प्रचार प्रसार जोरों पर था।

मार्दे का जन्म चीनी कोठी में हुआ था। उसी कोठी में आर्य समाज की एक शाखा थी जिसमें आर्य सेवक श्रीमान बिलट थे जो डा० रुद्रसेन निऊर जी के मामा थे। उस परिवार के सम्पर्क में आकर लड़कपन से ही मार्दे सत्संग में आया-जाया करता था। जब डा०निऊर जी छुट्टियाँ बिताने जाते थे तो मार्दे से मिला करते थे। जीवन भर दोनों मिलते रहे।

मार्दे के जीवन में आर्य सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री लछाया जी का भी गहरा प्रभाव पड़ा। लछाया जी सब्ज़ी बेचा करते थे और साथ ही लोगों को यज्ञ-हवन, सत्संग में आने और हिन्दी पढ़ने को प्रेरित करते।

भयंकर तूफान ज़ेरवेज़ के बाद १९७५ में मार्दे परिवार सहित बाचीमारे आ गया और वहीं पर उसका शरीरान्त हुआ। बाचीमारे में आर्य मंदिर बनाने में पूरा सहयोग दिया। समाज बनाया गया और आगे चलकर समाज का संचालक बन गया। कई वार आर्य समाज के प्रधान पद को सम्भाला और मंत्री भी बना। मृत्यु पर्यन्त सदस्य रहा।

गाँव की परिधि को पार कर सावान प्रांतीय परिषद् के सदस्य भी बना और मरते दम तक बना रहा। आज उसके दो पुत्र और एक पुत्री को पत्नी के साथ छोड़कर सदा के लिए चला गया। मार्दे तमिल भाषा भाषी होते हुए हिन्दी बोलते, पढ़ते और हिन्दी में भजन भी गाते । अभी कुछ ही दिन पहले मैंने उसे भजन गाते हुए सूयाक उपकेन्द्र में देखा था।

अन्तिम दिन मरने से पहले सूयाक सब सेंटर में एक समारोह में भाग भी लिया था। उसकी अन्त्येष्टि भारी जन समूह के बीच हुआ। आचार्य बितूला ने पूरे वैदिक तरीके से शुरू से अन्त तक अन्तिम क्रिया की। उसको दो पुरोहिताओं का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

श्री प्रविण तोरल जी -- एक आर्य सेवक सम्मानित हुए

वेदसुधा गंगू

अति प्रसन्नता एवं गर्व की बात है कि इस साल ग्रॉं-पोर आर्य ज़िला समिति की सलाह से आर्य सभा ने ग्रो-बियो, न्यू ग्रोव के निवासी श्री ताराचन्द तोरल जी को सम्मानित किया। वर्तमान में आप ग्रो-बियो समाज के मंत्री हैं। यह वह समाज है जिसकी स्थापना वर्षों पहले तोरल परिवार के तीन सदस्यों ने की थी जिनमें मोती तोरल जी भी थे।

श्री ताराचन्द तोरल जी बचपन से ही समाज में आते-जाते और उसकी गतिविधियों में भाग लेते रहे। आपके पिता श्री परसराम तोरल जी २८ वर्षों तक उस समाज के अंतरंग सदस्य रहकर मंत्री, कोषाध्यक्ष और पड़तालक के पद सम्भालते रहे। इसी तरह आपकी माता श्रीमती प्रेमज्योति तोरल ग्रो-बियो आर्य महिला समाज में अपनी सेवाएँ प्रदान करती रहीं।

पिछले चौंतीस वर्षों से श्री ताराचन्द तोरल जी अपने समाज में एक अति कर्मठ सदस्य के रूप में सेवारत हैं। १९८० से २००२ तक, अर्थात् लगातार २३ सालों तक कोषाध्यक्ष पद को सम्भालते हुए आपने कई अच्छे कार्य किये। सर्वप्रथम आपने अपने गाँव के हिन्दी अध्यापकों एवं हिन्दी-प्रेमियों को ग्रो बियो समाज के सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया। अब तक आपने सौ से अधिक लोगों को अपने समाज में सदस्य बनाने का सफल प्रयत्न किया। आपके सुप्रयास से समाज के कोष में अच्छी वृद्धि आई जिससे अनेक योजनाओं को कार्यरूप देने में आपको सफलता मिली। मंदिर का पुनर्निमार्ण एवं विस्तार करके उसे सुन्दर रूप दिया गया तथा मेज़-कुरसियाँ एवं अलमारी आदि सामान खरीदे गये।

जब से श्री ताराचन्द तोरल जी मंत्री पद सम्भाल रहे हैं, बारह साल हो चुके। इस पद को भी आप बड़ी खूबी के साथ सम्भाल रहे हैं। अन्य कर्मचारियों की सहायता से आप अनेक धार्मिक कार्यों-यज्ञ -महायज्ञों एवं प्रचार कार्यों का आयोजन करते रहते हैं। आपकी कोशिशों से समाज में पिछले पैंतीस सालों से बड़े नियमित एवं सुचारु रूप से साप्ताहिक सत्संग का आयोजन होता है। इसके साथ-साथ श्री ताराचन्द तोरल जी समय समय पर अपने गृह पर यज्ञों का अनुष्ठान किया करते हैं, अन्यान्य समाजों के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भी ग्रो-बियो आर्य समाज की ओर से आप ही ज्यादातर अपनी उपस्थिति देते हैं। आपके शाली व्यवहार के कारण लोग आपको बहुत चाहते हैं, परिवार में, नौकरी में अथवा पूरे गाँव में। अतएव अन्य समाजो के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाए रखना उनके लिए स्वाभाविक ही है।

मार्के की बात यह भी है कि कोषाध्यक्ष एवं मंत्री के पद सम्भालते हुए श्री ताराचन्द जी पिछले पैंतीस वर्षों से (१९८०-२०१४) अपने समाज की हिन्दी पाठशाला के मनेजर भी हैं। वैसे आप सरकारी पाठशाला में मुख्य अध्यापक तो हैं ही। अतः मनेजर का पद सम्भालना भी आपके लिए तनिक भी कठिन नहीं।

सर्वगुण सम्पन्न ताराचन्द तोरल जी एक आदर्श गृहस्वामी, शिक्षक और समाज सेवक हैं। आप आर्य समाज के सच्चे सेवक और महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्तों में हैं। अपना पारिवारिक कर्त्तव्य निभाते हुए आप अपने सामाजिक कार्यों को भी अति महत्त्व देते हैं। आपके समाज के लोग इस बात से पूरी तरह से सहमत हैं कि आपके समान निस्वार्थ, त्यागी, परोपकारी, सुशील और ईमानदार आर्य सेवक मिलना बड़ा कठिन है।

New Year Message

Dear Members,

Year 2014 is at its end and New Year 2015 is already at our doorstep. It is indeed a moment of joy which everybody awaits wish impatience. But, where New Year is a moment of happiness, it is also a time of sadness for some persons who have lost their dear and near ones during the year 2014. The Arya Sabha pays homage to those servants who are no more with us and extends its heartfelt sympathy to their relatives.

For Arya Sabha Mauritius, 2014 has been an active year as previous years. In addition to our normal activities of preaching and propagating 'dharma' and promotion of education the Arya Sabha Mauritius completed some ambitious projects among which some are :-

(1) The extension work at DAV Morc. St. Andre College, where eight classerooms have been constructed at the cost of appox. Rs 8 million.

(2) A student of the DAV Morc. St. Andre College was classified after the laureates at the HSC exams last year and thus boosted up our institution to national level. Indeed it is a pride for the DAV College to have its standard upgraded.

(3) The Arya Sabha Mauritius opened a new branch of our Special Needs School for challenged children at Union Vale Vedic Centre.

(4) We obtained a grant of Rs 2 million from the Ministry of Gender Equality and Child Welfare to purchase a new Toyota Hiace Van and buy equipment for the challenged children.

(5) The Arya Sabha Mauritius obtained three arpents of prime land at Rose Belle for the promulgation of an educational project.

(6) The DAV Degree College has been renamed Rishi Dayanand Institute and has been affiliated to the Open University of Mauritius.

(7) With the presence of Swami Ashutosh for nearly three months in Mauritius, our preaching work got a boost up and the Shrawani Mahotsav met a resounding success.

(8) Several workshops, competitions and youth activities were organized to empower our youth.

(9) Photo Voltaic at the cost of over Rs17 million has been placed on five main buildings of Arya Sabha Mauritius and generation of electricity has already started.

(10) Purchase of a new Toyota Autovan for the Belle Mare Ashram financed by Late Dr Hansa Gunessee has been made.

(11) Training of 76 persons in Vedic Phylosophy and Theology at our Rishi Dayanand Institute.

We thank all our members and supporters for their support without which all these realizations would not have been possible.

Year 2015 appear to be more challenging and we rely much on your collaboration and support to make Arya Sabha Mauritius more dynamic.

The President and members of the Managing Committee of Arya Sabha Mauritius seize this opportunity to extend their warmest wishes for a happy New Year 2015 and a joyful Makar Sankranti.

H. Ramdhony, ***Arya Ratna***
Secretary
Arya Sabha Mauritius

Speech by His Excellency Mr Rajkeswur Purryag, GCSK, GOSK, President of the Republic of Mauritius, on the occasion of the Graduation Ceremony of the Rishi Dayanand Institute held on Saturday 20 December, 2014 at 14 00 hours at Pailles.

Professor Soodursun Jugessur, Chairman of Council, University of Mauritius
Shri Pankaj Jindal, Representative of the Indian High Commission
Dr Odaye Narain Gangoo, Dean of the Rishi Dayanand Institute
Mrs Roshni Narain, Academic Manager and Programme Officer
Mr Balchan Tanakoor, President of the Arya Sabha Mauritius
Mr Hurrydev Ramdhony, Secretary of the Arya Sabha Mauritius
Mr Bholanath Jeewuth, Treasurer of the Arya Sabha Mauritius
Distinguished Guests
Dear Parents, Students and Graduands
Ladies and Gentlemen

Good afternoon!

I wish to thank Dr. Gangoo, Dean of the Rishi Dayanand Institute for having invited me to participate in this 5th Graduation Ceremony of the Institute.

I understand there are some 24 students who have successfully completed their Bachelor degree programmes, and 20 others who are to graduate at Master's level in different fields of study.

Let me therefore congratulate all the graduands for their hard work and perseverance as well as the commitment they have demonstrated throughout their academic journey.

I also wish to express my sincere thanks and appreciation to the management of the Institute, in particular, the Dean and the teaching and non-teaching staff, for their dedication and effort in the academic performance and success of the graduands.

I would furthermore, like to thank the Arya Sabha Mauritius for their vision and commitment in setting up this post-secondary institution which reflects their ambition to be a "sustainable, accessible, affordable and highly competitive and effective" education provider – one that delivers real benefits to the citizens.

As we know, the Arya Sabha Mauritius has, since its inception in 1910, remained at the forefront of the education and emancipation of the working classes in Mauritius.

Indeed, education has been one of the cornerstones of the Arya Samaj Movement across the world.

I am glad that the Arya Sabha Mauritius has not faltered in its mission of creating accessibility to education to the socially and economically disadvantaged segments of our population, especially those coming from the rural areas.

This is also very much in line with the ideals and philosophy of Shri Swami Dayanand Maharaj, the Founder of the Arya Samaj Movement.

I know that the Rishi Dayanand Institute is affiliated with the prestigious Kurukshetra University of India which obviously gives an added prestige to the Institute and the quality education that it is dispensing to its students.

Kurukshetra University is among the reputable universities in India, well known for its academic excellence, particularly in the fields of science, technology, social science, performing arts, languages, life sciences and a wide array of other disciplines.

I have no doubt therefore that the Rishi Dayanand Institute will benefit immensely from the expertise and educational values and principles of the Kurukshetra University, which can in turn serve our students better.

As you know, education systems across the world are in the midst of very challenging times.

There is by and large a pressing call to reinvent the system with focus on the educational needs, skills and competencies of this 21st Century.

Every country is facing challenges in varying degrees and dimensions.

As we steam ahead in this 21st Century, it is becoming increasingly clear that education will continue to remain the main driver of growth and development of any country in the world, per force necessitating the acquisition of new skills, knowledge and competencies.

There is no denying that education is fundamental to growth and development.

In an excellent document published in 2011 and entitled *"Learning for All – Investing in People's Knowledge and Skills to Promote Development"*, which indeed encompasses the Education Strategy for the year 2020 of the World Bank, the Bank has acknowledged that the overarching goal of education is not just schooling, but learning.

And *"the drivers of development will ultimately be what individuals learn, both in and out of school, from pre-school through the labour market."*

It is also noted in that same document that the Bank's new 10-year strategy now is to seek to achieve this broader "Learning for All" objective by promoting country-level reforms of education systems and building a global knowledge base powerful enough to guide these reforms.

There is no doubt therefore that in our own case, we should try for something better than any one thought possible while taking on board our specific realities, needs and constraints.

There should also be a major paradigm shift.

And the most important objective of education should be to create people with the character to transform the world around them, no matter how big that world is.

Indeed, the whole idea should be to see education as a transformer of expectations, not the receptacles.

As a well-known philosopher once put it – (Quote)

"Education is after all, only a tool; everything depends up the workman who uses it." (Unquote)

Dear Graduands

To-day marks an important day in your lives.

It's just the beginning of a long journey.

While you celebrate your academic achievements this afternoon, I want to urge you to continue your quest for knowledge.

Because as Robert Maynard Hutchins, an educational philosopher said, – (quote)

"The object of education is to prepare the young to educate themselves throughout their lives." (Unquote)

And in the words of Hellen Keller, another American author and University Professor - (Quote)

"The best educated human being is the one who understands most about life in which he is placed." (Unquote)

These are words of wisdom from well-known scholars and educationists and they should inspire and guide you in your next educational journey.

But discipline is also important.

Indeed self-discipline should remain the key to your success.

With the right discipline, and mindset and principled behaviour and values, there is no reason why you will not succeed in life.

I will request you to cherish every moment of your life, in low or high times and fly high in the world with your head held high.

Again, I would like to congratulate you all upon your success and wish you well in your future endeavour.

Let me also take this opportunity to wish each one of you a Merry X mas and a Happy New Year, which I am sure will bring you plenty of joy and prosperity.

I thank you for your attention.

Simplicity was… is… and will always be… the highest form of elegance
It is simple to be difficult… but difficult to be simple
Keep It Simple & Sane.

"Simplicity is the extreme sophistication." (Leonardo da Vinci) This quote, as the cap which fits all heads, is 'a nugget of wisdom' in today's context of celebrations where most people, from the well-off to the underprivileged, leave no stone unturned in putting up a show to bid farewell to 2014 and welcome 2015. Sensible people are at a loss in front of the "shopping craze". The low level of awareness that clouds our sense of rational thinking during the festive period is shocking. The superfluous reigns over fundamental needs: crackers…air and noise pollution, booze parties…injurious to health, high-powered music… blowing up the quietude of our environment.

The Vedic (universal) way of living

As we bid farewell to the outgoing Gregorian calendar year let us be inspired by this Vedic hymn: *Om samvatsaro~si parivatsaro~seedāvatsarosidwatsaro~si vatsaro~si* | As true human beings we need to live up to the edicts of *Dharma* all times. As learned persons we should not spend time on futile matters. We should dare to abandon what has to be discarded as well as be righteous at the level of thoughts (*manasā*), speech (*vāchā*) and actions (*karmanā*). Time follows its cycle…without any divergence, seconds cumulate to minute, hour, day, week, fortnight, month, seasons, year, decade, century, millennium, etc. The new era would be beneficial to the self and all around us only if we are steadfast on principles.

Empowered with a socially responsible, non-discriminatory and non-addictive, lifestyle and attitudes we would experience an enormous increase in faith, truth, happiness, harmony. The end result will be a multifold uplift in the physical, moral, intellectual and social welfare of mankind, where our material and spiritual desires would be fulfilled.

The need for tranquility

We should consciously learn to withdraw from the world of physical sound, as a start to access the silence within. *Brahma Yajna* or *Sandhya*, a meditative process (up□sn□ vidhi) is prescribed at twilight (dawn and dusk) to bring us to that inner quietness and discover our real self as well as the Supreme Being. Such daily spiritual practice yield clarity of vision.

Balancing the spiritual self and the practical self

We struggle to satiate the basic physical needs: food…shelter…clothing. We work hard to earn a living, interact with people and situations, pay bills, etc. Spirituality is inherent, natural and vital to humans. "Life" on earth is meant to attain physical and spiritual insight: "bhoga & apavarga" (Yog Darshan) and "abhyudaya & nisreyasa" (Nyaya Darshan). We shall be the optimum self when both the physical and spiritual self are in harmony. We need to give much attention to our physical self as we should feel comfortable in what we are doing.

The thumb rule to harmony

Moreover we need to listen to our inner self, be aware of our reactions prior to any action and examine its source. Guilt is always felt on a *post-mortem* basis. ***Putting the brain into gear before entering into action*** we shall feel a sense of well being and satisfaction if we are on the right track, if not we should abandon the idea. Often our ego dominates on logic and the then idle ignores that little inner voice - deeming it as 'foolish'. Yet that 'gut-feel' is our safest bet. As the most faithful friend truest companion, it leads us towards our purpose.

Resolutions for the New Year :

- Be transformative, starting with the self and expanding this positive attitude and/or energy to our outer environment – family, friends and society at large.
- Refrain from futile spending; dedicate time and money to improve the physical, mental/moral and social standards of the needy.
- Expand our level of awareness and free ourselves from the cacophony clouding festive periods.
- Commit ourselves to human values as the pillars of development.
- Live to the ideals of the universal, evergreen and irrefutable edicts of Dharma: patience… forgiveness… mind-control… non-stealing… hygiene… control of the senses… intellect… knowledge… truth… level-headedness.
- Be caring, compassionate, dedicated, ever ready to stand up for what is just and right.
- Be role models of integrity, noble in thoughts, speech and actions.
- Move hand-in-hand with good and goodness, away from bad and badness.
- Legate the rich heritage of 'the natural way of life, self-discipline, integrity, high character, responsibility, honesty, etc. and never compromise on these ideals' to generations to come.
- Motivate others to come under the umbrella of virtue, i.e. noble character, actions and instinctive qualities… where self confidence, patience, devotion, hard work and commitment empowers us to tread on the rugged path to progress and success.
- Perceive the precious gift of life and its challenges as positive pinpricks – invigorating, to re-establish the balance on the physical, moral and spiritual planes.

May the All-merciful bestow his blessings upon all for a sparkling future!
Bramdeo Mokoonlall
Darshan Yog Mahaavidyaalaya, Gujarat, India

ओ३म्

प्रिय आर्य बन्धू

वर्ष २०१४ कुछ हीं दिनों में समाप्त होने जा रहा है और नव वर्ष २०१५ दरवाज़े पे आ खड़ा है। हर कोई इस शुभ अवसर की प्रतिक्षा बड़ी बेसबरी के साथ करता है। जहाँ ये हर्षोउल्लास का समय होता है वहीं कुछ लोगों के लिए दुखः और उदासिनता का द्योतक भी होता है, क्योंकि साल २०१४ में कितने हीं हमारे आर्य सेवक और सेविकाएँ अपनों से बिछड़ गये। उन लोगों के प्रति हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा उनके परिवारों के साथ अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं।

वर्ष २०१४ आर्य सभा के लिए पूर्व वर्षों की तरह सक्रिय और प्रगतिशिल रहा। धर्म एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार के आलावा कुछ नई और महत्वपूर्ण योजनाओं को कार्यरूप देने में आर्य सभा सफल रही जो निम्न हैं –

(१) D.A.V. Morc. St. Andre कालेज का विस्तार। आठ नये कमरों का निर्माण किया गया। जिसकी लागत लगभग ३० लाख की है।

(२) Union Vale वैदिक सेन्टर में विकलांग बच्चों के लिए एक नई शाखा खोली गई।

(३) Gender Equality – मन्त्रालय से एक नई Toyota - Hi Ace Van एवं विक्लांग बच्चों के लिए ६ लाख रुपये के शैक्षिक एवं स्वास्थ्य सम्बंधी सामान प्राप्त किया गया।

(४) रोज़ बेल में कालेज निर्मित सरकार से ३ बिघे ज़मिन प्राप्त की गई ।

(५) डी.ए.वी डिग्री कालेज का पूनर-नामकरण कर ऋषि दयानन्द इन्स्तिच्यूत में परिवर्तित किया गया एवं "Open University" के साथ पंजिकरण भी किया गया ।

(६) प्रचार कार्य को गतिशिल बनाने के लिए स्वामी आशुतोष जी को ढाई महिनों के लिए लाया गया।

(७) युवक/युवती संघ को और सक्रिय बनाने के लिए विभिन्न कार्यशाला, कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

(८) आर्य सभा के पाँच मुख्य भवनों पर Photo Voltaic बिठाया गया और बिजली-निर्माण कार्य शुरू हो गया। जिसकी लागत लगभग २६ लाख की है ।

(९) बेल मार आश्रम के लिए एक नई Toyota Van स्वर्गीय डा० हंसा गणेशी की सहायता से खरीदी गई ।

(१०) दयानन्द इन्सचिचूट में ७६ लोगों को वैदिक दर्शन और वैदिक सिद्धान्त में प्रशिक्षण दिया गया ।

वर्ष २०१५ और चुनौतिपूर्ण रहेगा अतः पूर्णाशा करते हैं कि आप सबका सहयोग पुनः प्राप्त होगा जिससे हम आर्य सभा मोरिशस को वर्ष और प्रतिशिल बना सकें।

वर्षान्त के इस विशेष अवसर पर हम आर्य सभा मोरिशस् की तरफ़ से सभी आर्य बन्धुओं एवं सहयोगियों को धन्यवाद देना चाहते हैं और नव वर्ष २०१५ के लिए मंगल कामना करते हैं।